



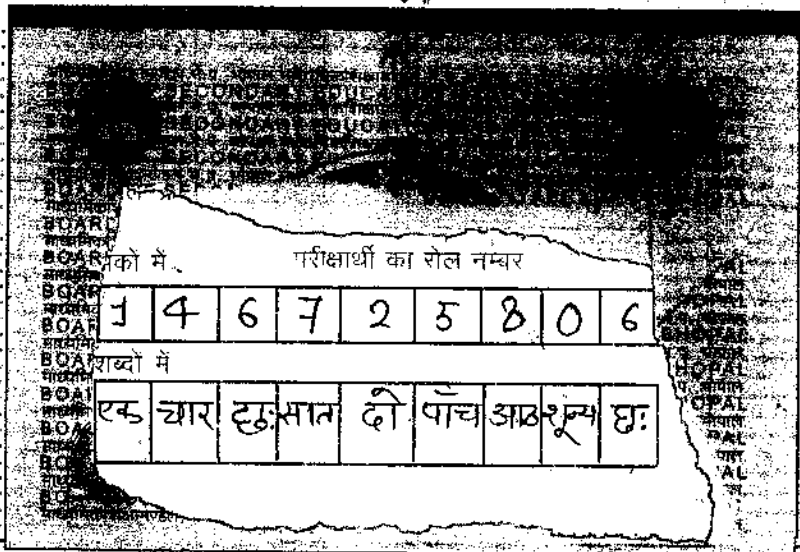
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष 2014

परीक्षाओं द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय **विशेष हिन्दी** विषय कोड **0 0 1** परीक्षा का माध्यम **हिन्दी**

स्टीकर तौर के निशान ↓ से मिलाकर लगाये



उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छ	आठ

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अक्षर में **2** शब्दों में **दो**
ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक **एन**
ग - परीक्षा का दिनांक **29 03 14**
परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

HIGH SCHOOL CERTIFICATE EXAM- केंद्र क्र. 072013

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर **मीमली सीमा उर्वे**
केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर **प. ड. ...**

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समस्त पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई गई हो।
विचारित मुद्रा **Mrs. M. Borkar (Principal)**
Govt. H.S. Nadan Kheda Dhar
Reg. No. DH/TD/001/008

पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर **डॉ. श्रीकांत द्विवेदी**
पदनाम - प्रधानाध्यक्ष
V.No. 9286235992
V.No. DH/TD/001/0086
नाम - श्रीमती विद्या पवार
पदनाम - अध्यापक
पुस्तिका क्र. DH/TD/001/186
स्थापित संस्था का नाम -
शास. क. उ. मा. वि. धार

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		

Laser/Inkjet-Copier Label A4ST-16 99 1x33 9mmx16

/mat

low/ep

Last

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

49



प्रश्न क्र. 1

- (i) पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवियों में से हैं।
- (ii) 'परम्परा बनाम आधुनिकता' विचारात्मक निबंध है।
- (iii) नर्मदा के उस कुंड के थोड़ा-सा ऊपर चलने पर 'माई की बगिया' है।
- (iv) जिसके प्रति स्थाई भाव उत्पन्न हो वह आलंबन कहलाता है।
- (v) रसोईघर तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

प्रश्न क्र. 2 के उत्तर

- उत्तर (i) महादेवी वर्मा
- उत्तर (ii) सुजान सिंह
- उत्तर (iii) कहानी
- उत्तर (iv) निः + रस
- उत्तर (v) क्रोध

3



+



=



भाग पूरा पृष्ठ

पृष्ठ 3 का अंक

कुल

प्रश्न क्र. 3 के उत्तर,

(i) सत्य ✓

(ii) सत्य ✓

(iii) सत्य ✓

(iv) असत्य ✓

(v) असत्य ✓

प्रश्न क्र. 4 (सही जोड़ी)

'अ'

'ब' (उत्तर)

(i) पृथ्वीराज रासो

⇒

महाकाव्य

(ii) उदबोधन

⇒

रामधारी सिंह 'दिनकर'

(iii) सच्चा धर्म

⇒

सेठ गोविन्द दास

(iv) थके हुए कलाकार से

⇒

धर्मवीर भारती

(v) बेटियाँ पावन दुआएँ हैं

⇒

अजहर/हाशमी

4

$$[] + [] = []$$



पृष्ठ 4 के अंत

वृत्त में

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 5 के उत्तर.

उत्तर (i) आक्रीश में आकर मजदूरों ने सुरज की निगल लिया।

उत्तर (ii) लोक संस्कृति का जन्म गाँवों में हुआ।

उत्तर (iii) लालच को भूलकर गाँवों में मनुष्य धनी बनता है।

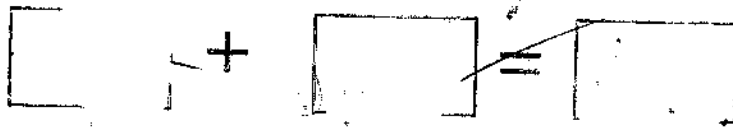
उत्तर (iv) उपासना करने वाला उपासक कहलाता है।

उत्तर (v) "राम! तुम नगर में रही" यह आज्ञावाचक या आदेशात्मक वाक्य है।

प्रश्न क्र. 6 का उत्तर.

कुब्जा राजा कंस की दासी थी उसका कार्य प्रतिदिन राजा कंस के माथे पर चंदन का तिलक लगाना था। वह अत्यंत कुरूप तथा कुबड़ी थी। जब कुब्जा अपने मामा कंस के बुलावे पर कंस के महल तक पहुँचे तो द्वार पर उन्हें कुब्जा मिली जिसने उन्हें चंदन का तिलक लगाया। तभी कुब्जा ने उसके कुब्ज पर हाथ रखा, अपने पैर से

5



यम पूं पृष्ठ

पृष्ठ

अंक



उसके पैर को दबाकर एवु झटका दिया जिससे वह सीधी ब सुंदर हो गयी इसका उद्धार श्रीहृष्ण के द्वारा हुआ।

प्रश्न क्र. 7 का उत्तर.

बालक राम कभी तो खेलने के लिए चंद्रमा मांगते हैं, कभी फर्श या खंभे पर अपना प्रतिबिम्ब देखकर उर जाते हैं व कभी तो खुश होकर ताली दे-देकर नाचने लगते हैं और कभी किसी चीज की ज़िद पकड़कर बैठ जाते हैं। यदि वह चीज न मिले तो रुठ ही जाते हैं। बालक राम की इन्ही बालक सुब्रह्म चेष्टाएँ देखकर माताएँ खुश हो रही हैं।

प्रश्न क्र. 8 का उत्तर.

जब मनु थक कर नदी के किनारे विश्राम करने के लिए मुँह नीचे किए बैठे थे तो तभी श्रद्धा ने आकर इनसे अपने मधुर स्वर में उनका परिचय जानना चाहा। उसकी (श्रद्धाकी) भोंरे के गुंजार के समान मीठी वाणी सुनकर मनु को हर्ष मिश्रित झटका सा लगा और वे उसकी तरफ मुड़कर देखने के लिए विवश हो। श्रद्धा का सुंदर रूप देखकर वे अचंभित हो गए।

(6)

$$\boxed{21} + \boxed{11} = \boxed{32}$$



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 9 का उत्तर

क्षुधवा का

मानव जिस ओर गया वहाँ उसने सृजन किया उसने आकाश तथा वायु को अपना मित्र बनाया। पृथ्वी के भूगर्भ के खुदाई कर नए-नए खोजों की तथा आविष्कार किए मानव जिस ओर गया वहाँ उसने घर या मकान बनाए व उसने तीर्थस्थलों का निर्माण भी किया।

B
S
E

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर

खाली पेट कविता के माध्यम से कवि "आभिमान अनंत" जी मानव नामक ईश्वर की की श्रेष्ठ कृति पर प्रश्न आते हुए कहते हैं कि हे ईश्वर ! तुमने मनुष्य को खाली पेट ही ढीक किया पर तुमने उसे फैलाने के लिए हाथ तथा टेढ़ने के लिए घुटने क्यों दिए इन्हीं कारणों से आज मानव को भूख लगने पर असमर्थ होने का भीख मांगना पड़ता है।

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

ललित कलाओं का ग्राम्य जीवन में बहुत महत्व है। गाँव का व्यक्ति ललित कलाओं के कारण ही मनोरंजन तथा रोजगार प्राप्त कर पाता है। ललित कलाओं के कारण गाँव जीवन रसपूर्ण व आनंदमयी बना रहता है।

7

7

+

7

= 14

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 7 के अंक



प्रश्न क्र. 12 का अथवा का उत्तर

यदि देश के नागरिक सार्वजनिक स्थलों पर बैठकर यह बातें करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा, वह नहीं हो रहा तथा अपने देश की तुलना दूसरे देश से करते हैं और इस तुलना में अपने देश को निम्न तथा दूसरे देश को श्रेष्ठ मानते हैं तो हमारे देश के नागरिकों के इस तरह के व्यवहार से देश के मानसिक बल का ह्यास हो रहा है।

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर.

वृत्तियों के उन्नयन से आशय वृत्तियों को कामनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठाकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर प्रवृत्त करने से है। मनुष्य की वृत्तियों को संतुष्ट रहना चाहिए वृत्तियों का उन्नयन अर्थात् छोटी - छोटी सी कामनाओं की पूर्ति के बारे में न सोचकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर उन्मुख होने से है।

प्रश्न क्र. 14 का उत्तर.

कति मानखलाल चतुर्वेदी देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चाहते हैं कि देश के सभी नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों और स्वयं के महत्व को समझे तथा किसी न किसी सृजनात्मक कार्य में लगे रहें और अपने देश

निरंत

8

योग

+

क

=



BOARD OF SECONDARY EDUCATION, UTTAR PRADESH, BHOPAL

की स्वतंत्रता की रक्षा करें।

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर.

(1) आँखों का तारा - बहुत धारा

वाक्य → मोहन इसकी माताजी की आँखों का तारा है

(2) हाथ मारना - धुंज़ लेना

B वाक्य → छोटे भाई ने बड़े भाई के हिस्से की
S आइस्क्रीम पर भी हाथ मार लिया।
E

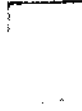
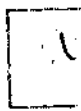
प्रश्न क्र. 16 का उत्तर.

गीतिका छंद - मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक
चरण में 14-12 की
यति पर 26 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण -

हे प्रभु आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।

लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें,
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें ॥



प्रश्न क्र. 14 का अथवा का उत्तर.

लेखक "हरिशंकर परसाई" जी कहते हैं कि कुछ लोग बड़े ही निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं अर्थात् वे अकारण ही मिथ्यावाचन करते हैं। उनके झूठ बोलने में उन्हें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं होती। लेखक जी ऐसे ही एक व्यक्ति से मिले, उस व्यक्ति ने कहा - "मैं तो त्रेन से उतरकर सीधे तुमसे मिलने चला आया" जैसे आत्मा का एक खंड दूसरे से मिलने ही आतुर ही जबकि लेखक को पता था कि वह कल का आया हुआ है। ऐसे लोग निष्प्रास निष्पुयोजन ही झूठ बोलते हैं तथा उनके झूठ से किसी प्रकार हानि नहीं होती है इसलिए लेखक ने उन्हें "निर्दोष मिथ्यावादी" कहा है।

प्रश्न क्र. 18 का अथवा का उत्तर.

संधि और समास में अंतर लिखिए -

क्र.	संधि	समास
(1)	दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं।	दो शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।
(2)	दो वर्णों के मेल के कारण विकार उत्पन्न होता है।	दो शब्दों के मिलकर उनके योजक शब्दों का लोप हो जाता है।
(3)	संधि को तोड़ना विच्छेद कहलाता है।	समास को तोड़ना विग्रह कहलाता है।

10

[] + [] = []

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंत



प्रश्न क्र

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर.

महाकाव्य व खंडकाव्य में अंतर नि. लि. है -

	महाकाव्य	खंडकाव्य
B	(1) महाकाव्य में संपूर्ण जीवन वृत्त या घटना विशेष का सांगोपांग चित्रण या वर्णन होता है।	खंडकाव्य में नायक के जीवन के किसी एक खंड या वृ हृदयस्पर्शी घटना का वर्णन होता है।
S	(2) महाकाव्य में सभी छंदों का प्रयोग होता है।	खंडकाव्य में एक ही छंद का प्रयोग होता है।
E	(3) महाकाव्य में शृंगार शांत तथा वीर रस में से किसी एक की प्रधानता होती है।	खंडकाव्य में शृंगार या करुण रस होता है।
	उदा. कामायनी (जयशंकर प्रसाद)	इयां पंचवटी (मैथिली शरण गुप्त)

11

$$\square + \square = \square$$

योग पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

गुण



प्रश्न क्र. 20 का उत्तर.

प्रगतिवादी युग का काल सन् 1936 से 1943 तक रहा।

विशेष -

इस काल में हमारी वैज्ञानिक प्रगति भी हुई तथा हमारे देश के सुविचार तथा कार्यों में भी प्रगति हुई।

प्रगतिवादी काव्यों की चार विशेषताएँ निम्न हैं -

- (1) शोषितों के प्रति प्रेम तथा शोषकों का विरोध
- (2) ईश्वर के प्रति अनास्था
- (3) नारी के उत्थान की भावना
- (4) समाज के वर्गों की समानता पर बल
- 4) सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार.

वर्णन

(1) शोषितों के प्रति प्रेम तथा शोषकों का विरोध -

इस युग में समाज के दो वर्ग हुए जिसमें अत्याचार सहने वालों के प्रति इस काल के कवियों ने स्नेह तथा अत्याचार करने वालों की नीति का विरोध अपनी कविताओं के माध्यम से किया है।

(2) ईश्वर के प्रति अनास्था - इस काल में अत्याचार बढ़ने, बुराइयों के बढ़ने

विश्वर

(12)

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व फल

पुष्ट

अंक

कुल



से भी कवियों/के मन में ईश्वर के प्रति
 अनास्था का भाव जागृत हुआ।

(3) नारी के उत्थान की भावना तथा समाज के
 वर्ग समानता पर बल -

इस युग के कवियों
 समाज में व्याप्त असमानताओं तथा
 नारी की बुरी स्थिति का वर्णन अपने रचनाओं
 में किया तथा समाज सुधार पर जीव दिया।

B (4) सामाजिक कुरीतियों पर उहार, -

S
 E इस युग में कवियों ने मुख्यतया
 सामाजिक कुरीतियों, अन्याय तथा शोषण के
 ऊपर उहार करने वाली कविताओं की रचना
 की।

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर.

निबंध - निबंध शब्द का अर्थ ऐसी गद्य रचना
 से है जिसमें किसी विषय को
 एक सीमित आकार में बाँधकर वर्णन किया
 जाए।

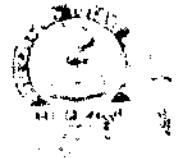
"बाबू गुलाबराय" के अनुसार "निबंध
 वह गद्य रचना जिसमें किसी विषय का
 वर्णन एक सीमित आकार में सजीवता,
 शोषण, चित्रात्मकता, व्यक्तत्व, संस्मरणीयता,
 तथा रमणीय भावों के साथ किया जाता
 है।"

13

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 13 के ऊपर



प्रश्न क्र. 22 का उत्तर.

साहित्यिक परिचय

रामवृक्ष बेनीपुरी

दो रचनाएँ - (1) गेहूँ और गुलाब (ललित निबंध)

(2) मील के पत्थर (संस्मरण)

भाषा - रामवृक्ष बेनीपुरी जी का भाषा वेद सरल, सुबोध, प्रवाहमय तथा बोधगम्य है।

उन्होंने भाषा में तत्सम, मद्भव, देशज, विदेशी, उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी किया है। बेनीपुरी जी ने भाषा में कठिन से कठिन बातों की सरलता से व्यक्त करने के तरीकों का प्रयोग किया है। आपकी भाषा में वीर रस या अोज गुण, संस्कार करने वाले लोकोक्तियों तथा यथाउचित मुहावरों का भी प्रयोग है।

शैली - रामवृक्ष बेनीपुरी जी की शैली में विविधता दिखाई देती है -

(1) नात्मक शैली - बेनीपुरी जी ने नाटक के पात्रों, चरित्र तथा घटना का सुलभ वर्णन हेतु इस शैली का प्रयोग किया है।

निरंतर

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

ये

पृष्ठ 14 के अंक

अंक



प्रश्न क्र (2) भावात्मक शैली - अपने ललित निबंधों व अभिव्यक्ति को भव पूर्ण तरी से करने के लिए इस कृत्वपूर्ण भावात्मक शैली का प्रयोग किया।

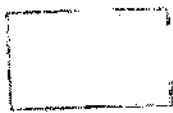
(3) प्रतीकात्मक शैली - उन्होंने अपने रचनाओं में लंबे-लंबे वाक्यों को सरल रूप में व्यक्त करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया। उन्होंने ललित निबंध "गोहूँ और गुलाब" में इसका श्रेणीय प्रयोग किया है जैसे उन्होंने लिखा है कि - "गोहूँ रोए खेत में और गुलाब रोए बगीचों में अपने भालिक के भाग्य पर दुर्भाग्य पर।"

(4) चित्रोपन शैली - रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने रेखाचित्र के भावों तथा अर्थों को स्पष्ट करने के लिए चित्रोपन शैली का प्रयोग किया है।

(5) विवेचनात्मक शैली - अपने चुने गए विषयों का विवेचन तथा आलोचना रचनाओं में इस शैली का प्रयोग किया गया है।

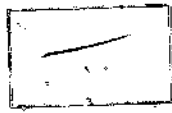
परिचय, निबंधकार, इतिहासकार, साहित्यकार, आलोचनाकार, कहानीकार आदि में आपका स्थान व योगदान स्मरणीय है।

15



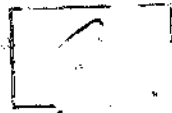
योग पूर्ण पृष्ठ

+



पृष्ठ १६ के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र. 23 का उत्तर

काव्यगत विशेषताएँ

दो रचनाएँ - महादेवी वर्मा

दो रचनाएँ - (1) यामा (इस कृति हेतु इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला)

(2) स्मृति की रेखाएँ (रेखाएँ)

कलापक्ष

(1) भाषा - इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, खड़ी बोली है। शब्दचयन उच्चकोटि का है। दुर्लभ वाचोक्ति सहजता से कहने की सामर्थ्यता इनकी भाषा में है।

(2) शैली - इनकी शैली मुक्तक काव्य शैली है। इनकी शैली में 'सागर में सागर भरने' की क्षमता है।

(3) अलंकार योजना - महादेवी जी ने अपनी रचनाओं में रूपक, यमक, श्लेष अतिशयोक्ति, अनुपास, मानवीकरण तथा उपमि सभी अलंकारों का प्रयोग अनुपम ढंग से किया है।

(4) छंदयोजना - इन्होंने अपनी रचनाओं में अलग-अलग प्रकार के पदों व छंदों का

निर्वाह



उपयोग किया है।

भावपक्ष -

- (1) प्रेम भावना - महादेवी जी को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। इनके काव्य में प्रेम की गहराई है।

जैसे - " मैं कण-कण में टाल रही अलि
आखड़े मिस प्यार किसी का ॥ "

B.
S
E

- (2) विरह वेदना - महादेवी जी के काव्य में विरह और वेदना की अभिव्यक्ति पुराने मात्रा में की है।

जैसे - " मैं नीर भरी दुःख की बरानी "

- (3) रहस्यवाद - इन्होंने प्रकृति के कण-कण में रहस्यमयी सत्ता का अनुभव किया है।

इन्होंने लिखा है -

" कौन तुम मेरे हृदय में,
मैं वीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ,
दूर तुमसे हूँ, अखंड सुहागिनी हूँ । "

- (4) प्रकृति चित्रण - छायावादी कवि होने के नाते इन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति का चित्रण उद्दीपन के रूप में किया है। आपके समान स्वामी कवियत्री अन्यत्र कही नहीं हैं।



प्रश्न क्र. 24 का उत्तर.

यं - लड्डुलुटान है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक "भवनीत" के "वात्सल्य भाव" के शीर्षक "सोए हुए बच्चे से" से ली गई हैं। इन पंक्तियों के रचनाकार "हरिनारायण व्यास" जी हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने अपने विचारों की कमियाँ व्यक्त की हैं।

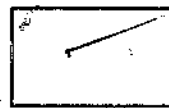
ब्याख्या - कवि हरिनारायण व्यास जी कहते हैं कि वे जब एक समझ की अवस्था में पहुँचे तो उनके विचारों में भी परिवर्तन हुआ। उनके विचार अब कोमल नहीं रहे बल्कि इस दुनिया के विचारों को समझते-समझते पूरी तरह से चोटिल हो गए हैं। उनसे सफलता प्राप्ति के लिए अपने आप के विचार तथा अंतर्द्वंद्वों को इस ऊपर आगे बढ़ाया जैसे कि कोई नाव पहाड़ों से टकराती आगे बढ़ रही है। उनके मन पर कई चीटें हैं और अब उनके ख्याल ऐसे नहीं रह गए कि वे किसी को उन्हें दे सकें।

- शेष - (1) विचारात्मक शैली का प्रयोग।
 (2) उर्दू शब्दों का प्रयोग।
 (3) कसूण रस प्रधान।

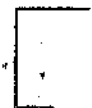
निरंतर



L



=



- कठिन शब्दार्थ - (1) ख्याल - विचार
 (2) दुनियादारी - सांसारिक बातें।
 (3) कामयाबी - सफलता।
 (4) लड्डुलुटान - शक्त से लचपथ

प्रश्न क्र. 25 का अथवा का उत्तर.

गाँवों - - - - - सकते हैं।

B संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक
S नवनीत के पाठ - "मेरे गाँव की
E सुख शांति किसने छीन ली?" से
 उद्धृत है। इसके रचनाकार "शंभुनारायण
 उपाध्याय" हैं।

प्रसंग - इस पद्यांश से लेखक गाँव का
 परिदृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

व्याख्या - लेखक कहते हैं कि गाँव में
 रहने वाले लोगों से हम जो
 कुछ सीख सकते हैं वह हम किसी किताब
 में पढ़कर या दूरदर्शन पर देखकर नहीं
 सीख सकते हैं। गाँव के व्यक्ति भी
 इसी बात की राह देखते हैं कि उनके क्रिया-
 कलापी से भी कोई कुछ सीखें। संस्कृति का
 अन्त गाँवों में हुआ परंतु इसे शहर तब
 पहुँचाने में केवल गाँवों का प्रयास रहा है।
 उनका जीवन सभी के लिए खुली किताब

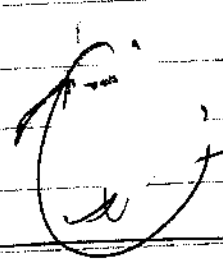
निरंतर



की तरह है परंतु इस किताब का एक पन्ना भी नहीं उलटा गया। गाँवों के रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र आभूषण, आचार-विचार, जीतिरिवाज, विश्वास और मान्यताएँ गाँवों और नृत्य, संगीत हमें हमारी संस्कृति के बारे में किसी न किसी तरह की शिक्षा देते हैं।

विशेष - (1) गाँव के परिवेश से अवगत कराया।
 (2) लोक संस्कृति की विशेषता से परिचय।
 (3) कर्मात्म शैली।

कठिन शब्दार्थ - (1) बाट जोटना - रास्ता देखना / इंजिन करना



- (2) समग्र - सारा / संपूर्ण
- (3) क्षमता - सामर्थ्यता
- (4) मान्यताएँ - परंपराएँ।

प्रश्न क्र. 26 के उत्तर.

उत्तर (i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक

"मानवता का आदर" है।

उत्तर (ii) यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है।

उत्तर (iii) खारांश - मानवता का आदर करने वाला यथार्थ मनुष्य होता है। मानव बुद्धि हीन न बनता है जब वह परिदृश्य की उपेक्षा कर देता है। परंतु सभी मानव सम्मान योग्य हैं तथा ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति हैं।



प्रश्न क्र

प्रश्न क्र. 27 का उत्तर.

स्थानान्तरण प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

श्रीमान प्राचार्य महोदय
सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
इटारसी (म.प्र.)

विषय - स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्राप्ति हेतु
आवेदन पत्र ।

B महोदयजी,

S विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय
E की कक्षा दशम की छात्रा हूँ। मेरे पिता शिक्षक हैं।
उनका स्थानान्तरण भोपाल हो गया है। मेरा परिवार
वहीं जा रहा है। मैं यहाँ अकेली रहकर अध्ययन
नहीं कर सकती अतः उनकी साथ जाना चाहती हूँ।
मैंने विद्यालय की समस्त शुल्क व सामग्री दे दी है।
अतः आप मुझे मेरा स्थानान्तरण प्रमाण पत्र
शीघ्र अति शीघ्र देने की कृपा करें ताकि मैं
सही समय पर भोपाल के विद्यालय में प्रवेश ले सकूँ।

धन्यवाद

आपकी आज्ञाकारी शिष्या

अ, व, स

कक्षा - दशम

दिनांक - 29-3-14



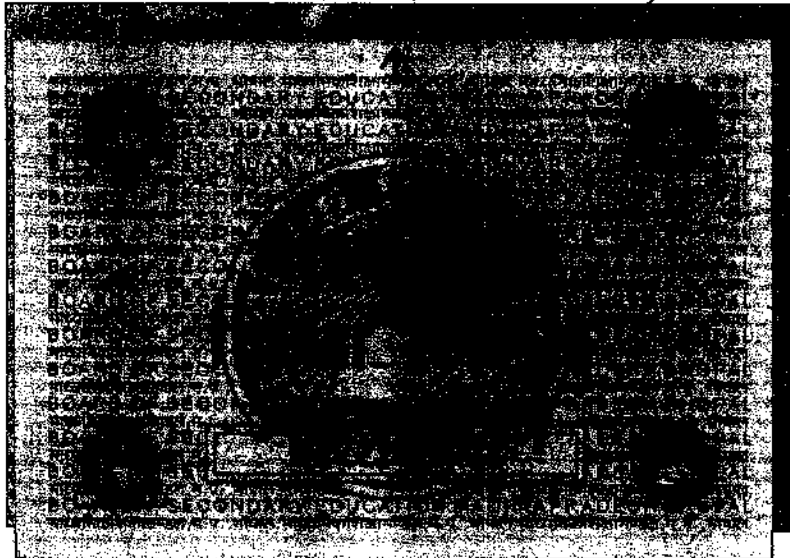
4 पृष्ठीय
वर्ष 2014
3 | 03 | 14

परीक्षा का विषय
वि. हिन्दी

0 0 1 हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाय →



परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा
परीक्षा केंद्र क्रमांक: 872013
पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर
श्रीमती सीमा कुंठे 29/03/14
केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
P. B. ... Adus

प्रश्न क्र. 28 का (ब) का उत्तर.

कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

- रूपरेखा →
- (1) पुस्तावना
 - (2) कम्प्यूटर का आविष्कार
 - (3) कम्प्यूटर क्या है ?
 - (4) इसका उपयोग
 - (5) उपसंहार.

वर्णन -

(1) पुस्तावना = कम्प्यूटर विज्ञान की एक महान देन जो निरंतर प्रगतिशील व प्रगति में सहायक है।

(2) कम्प्यूटर का आविष्कार - आधुनिक कम्प्यूटर के आविष्कार का श्रेय इंग्लैण्ड के

2

योग पूर्व पृष्ठः

पृष्ठ 2 का अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

वैज्ञानिक चार्ल्स बैबेज को जाता है।

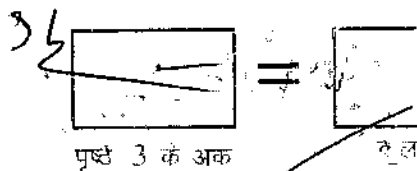
(3) कम्प्यूटर क्या है ? - कम्प्यूटर गणितीय समस्याओं को मैजि से सुलझाने व कई स्मृतियाँ सहेज कर रखने को यंत्र है।

(4) इसका उपयोग - इसका उपयोग चिकित्सा, शिक्षा, खेल, बैंक आदि हर क्षेत्र में होता है।

B
S
E
(5) उपसंहार - भारत ने अपनी उगति के लिए कम्प्यूटर के क्षेत्र में उगति की तथा नए - नए प्रकार के कम्प्यूटर का आविष्कार किया।

3

यो



प्रश्न क्र. 28 का (अ) का उत्तर.

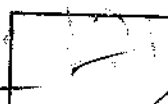
पर्यावरण प्रदूषण

- खपरिखा -
- (1) प्रस्तावना
 - (2) पर्यावरण और मानव
 - (3) पर्यावरण प्रदूषण के कारण
 - (4) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार
 - (5) प्रदूषण दूर करने के उपाय
 - (6) उपसंहर.

प्रस्तावना - प्राचीन काल से हमारी सभ्यता पर्यावरण पर आधारित रही है। पर्यावरण ने हमें बालक से युवा बनने में सहायता की तथा सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की। पर्यावरण शब्द का अर्थ है परि अर्थात् चारों ओर आवरण अर्थात् घेरे हुए। पर्यावरण शब्द का अर्थ है हमारे चारों ओर का घेरा जिसके अंतर्गत सभी जैविक तथा अजैविक घटक आते हैं।

" प्राचीन काल से आज तक
मानव का किया उद्धार,
ईश्वर ने हमें दिया है
पर्यावरण नामक सर्वोत्तम उपहार। "

पर्यावरण और मानव एक दूसरे के सहकर्मी व सहधामी हैं।



प्रश्न क्र

(2) पर्यावरण और मानव - पर्यावरण और मानव

का संबंध जन्म -
 अन्तर्गत का है। पर्यावरण और मानव जैसे
 एक सिक्के के दो पहलु हैं। यदि पर्यावरण
 न हो तो मानव की उत्पत्ति या निवास
 की कल्पना करना कठिन है और यदि
 मानव जहाँ न हो वहाँ पर्यावरण भी नहीं
 होगा। पर्यावरण में सभी जीवों से कुछ-न-
 कुछ लेते हैं तथा कुछ-न-कुछ देते हैं।
 पर्यावरण में मानव समाज का संचालन
 परस्पर सहयोग से करता है। इसके मुख्य
 तत्वों में पंचभूत तत्व हैं तथा अजैविक घटक

B
S

E (3) पर्यावरण पुदूषण - प्राचीन काल में मनुष्य

पर्यावरण व उकृति की
 गोंद में खेला उगति की ज्ञान प्राप्त किया
 परंतु आज मानव अतिकृतावादी हो गया है।
 अब वह सभी प्रकार से सुविधा संपन्न
 बनना चा रहा है जिसके लिए निरंतर
 किसी न किसी तरह उकृति को नुकसान
 पहुँचा रहा है। यदि पर्यावरण नाश
 इसी तरह होता रहा तो मानव का
 जीवन स्वयं संकट में होगा।
 पर्यावरण पुदूषण का आशय - पर्यावरण की
 प्राकृतिक संरचना व संतुलन में होने वाला
 कोई भी अवांछनीय परिवर्तन जिससे
 उसकी गुणवत्ता में कमी आए "पर्यावरण
 पुदूषण" कहलाता है।

2

पृष्ठ

4 पृष्ठीय



माध्यमिक शिक्षा

मध्य प्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे
विषय कोड

परीक्षा का माध्यम
हिन्दी

परीक्षा का दिनांक

29 03 14

परीक्षा का विषय
वि. हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

CERTIFICATE EXAM-
0009 CP. 01/2013

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर
श्रीमती अम्पुजा
09103114

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
P. B. Dabhi

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण हैं।
परंतु इसका सबसे मुख्य कारण मानवीय
क्रियाकलाप है। पर्यावरण प्रदूषण में
औद्योगिक प्रगति भी सहायक सिद्ध हुई है।

B
S
E

(4) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार - पर्यावरण प्रदूषण
मुख्यतः 4 प्रकार का होता है - जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण,
वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण।

जल प्रदूषण - जल के भौतिक तथा रासायनिक
गुणों में होने वाली कोई भी
अवांछनीय परिवर्तन जल प्रदूषण कहलाता है।
जल प्रदूषण के कारण जलीय जीव नष्ट हो
जाते हैं तथा मानव को उदर विकार के
आने हैं।



पृष्ठ के अंकों का योग

निर्देश

2

$$\frac{4}{5} + \frac{1}{5} = 1$$

योग पूर्व

पृष्ठ 2 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

इसके अलावा वायु में गैसों का अनुपात बिगड़ने से वायु प्रदूषण, मृदा के तत्वों के नष्ट होने से मृदा प्रदूषण तथा ध्वनि या शोर अधिक होने से ध्वनि प्रदूषण होता है।

"सभी प्रकार के प्रदूषण मानव जीवन की कल्पना से अधिक घातक हैं।"

(5) प्रदूषण दूर करने के उपाय - प्रदूषण के प्रकारों के हिसाब से उनके दूर करने के उपाय भी अलग हैं।

B
S
E

(i) जल प्रदूषण - कारखानों से निकलने वाले प्रदूषण युक्त जल को नदियों में न मिलाएँ, वृक्षारोपण करके जल की भूमिका का प्रयास करें।

(ii) वायु प्रदूषण - कारखानों की चिमनियाँ ऊँची बनाकर, उद्योगों को चारों ओर अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है। प्रदूषित कचरा या पॉलीथिन को न जलाना भी इसे कम कर सकते हैं।

(iii) मृदा प्रदूषण - मृदा में प्रदूषित पदार्थों को दबाने, पॉलीथिन डालने उर्वरक कीटनाशक आदि का छिड़काव से मृदा प्रदूषण होता है यदि ये कार्य न हो तो इस प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

विरं



V) ध्वनि प्रदूषण - कारखानों की मशीनों का समय-समय रखरखाव से भी यह प्रदूषण कम किया जा सकता है।

(6) अपसंहार - पर्यावरण प्रदूषण हमारे देश तथा मानव जीवन के सामने एक बड़ी समस्या बनकर खड़ा है। गाँधी जी ने कहा है कि "हम आकाश में उड़ना सीख गए, जल में तैरना परंतु पृथ्वी पर कैसे चलना है यह नहीं सीख पाए"। हमें यही याद हमारी संस्कृति तथा भविष्य को बचाना है तो अधिक से अधिक प्रदूषण रोकना होगा। इसके लिए सरकारी प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं।